७७८ ईडर, वैशाख वदी १२, शुक्र, १९५३

दो पत्र मिले हैं। यहाँ प्रायः मंगलवार तक स्थिति होगी। बुधवार शामको अहमदाबादसे डाकगाडीमें बंबई जानेके लिये बैठना होगा। प्रायः गुरुवार सबेरे बंबई उतरना होगा।

सर्वथा निराश हो जानेसे जीवको सत्समागमका प्राप्त हुआ लाभ भी शिथिल हो जाता है। सत्समागमके अभावका खेद रखते हुए भी सत्समागम हुआ है, यह परमपुण्यका योग है। इसलिये सर्वसंगत्यागका योग बनने तक जब तक गृहस्थावासमें स्थिति हो तब तक उस प्रवृत्तिकी नीतिसहित कुछ भी रक्षा करके परमार्थमें उत्साहसहित प्रवृत्ति करके विशुद्धिस्थानकका नित्य अभ्यास करते रहना यही कर्तव्य है।

७८५ बंबई, आषाढ़ वदी १, गुरु, १९५३

श्री धुरीभाईने 'अगुरुलघु' के विषयमें प्रश्न लिखवाया, उसे प्रत्यक्ष समागममें समझना विशेष सुगम है।

शुभेच्छासे लेकर शैलेशीकरण तककी सभी क्रियाएँ जिस ज्ञानीको मान्य है, उस ज्ञानीके वचन त्यागवैराग्यका निषेध नहीं करते। त्याग-वैराग्यके साधनरूपमें प्रथम जो त्याग-वैराग्य आता है, उसका भी ज्ञानी निषेध नहीं करते।

किसी एक जड़-क्रियामें प्रवृत्ति करके जो ज्ञानीके मार्गसे विमुख रहता हो, अथवा मतिकी मूढ़ताके कारण ऊँची दशाको पानेसे रुक जाता हो, अथवा असत्समागमसे मतिव्यामोहको प्राप्त होकर जिसने अन्यथा त्याग-वैराग्यको सच्चा त्याग-वैराग्य मान लिया हो, उसका निषेध करनेके लिये करुणाबुद्धिसे ज्ञानी योग्य वचनसे क्वचित् उसका निषेध करते हों, तो व्यामोहित न होते हुए उसका सद्हेतु समझकर यथार्थ त्याग-वैराग्यकी अंतर तथा बाह्य क्रियामें प्रवृत्ति करना योग्य है।

७९१ बंबई, श्रावण सुदी १५, गुरु, १९५३

जिसकी दीर्घकालकी स्थिति है, उसे अल्पकालकी स्थितिमें लाकर,
जिन्होंने कर्मक्षय किया है, उन महात्माओंको नमस्कार।

सद्वर्तन, सद्ग्रंथ और सत्समागममें प्रमाद कर्तव्य नहीं है।